



प्रेस विज्ञप्ति



**खरीफ मौसम में कम वर्षा की स्थिति से
निपटने के लिए कृषि परामर्श
(जून-जुलाई, 2015)**



**भा.कृ.अ.प. - भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
नई दिल्ली-110012
(www.iari.res.in)**

संकल्पना

- डॉ. रविन्दर कौर
निदेशक, भा.कृ.अ.प. - भा.कृ.अ.सं.
नई दिल्ली-110012
ई-मेल: director@iari.res.in
दूरभाष :011-2584 3375
- डॉ. जे.पी. शर्मा, संयुक्त निदेशक (प्रसार)
डॉ. आर.के. जैन, अधिष्ठाता एवं संयुक्त निदेशक (शिक्षा)
डॉ. के.वि. प्रभु, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान)
भा.कृ.अ.प.- भा.कृ.अ.सं.
नई दिल्ली-110012
ई-मेल: jd_extn@iari.res.in
दूरभाष :011-2584 2387

परामर्श मंडल

- डॉ. ए.के. सिंह (प्रभारी, मीडिया सैल), डॉ. डी.के. यादव, डॉ. आर.के. शर्मा, डॉ. बी.एस. द्विवेदी, डॉ. फिरोज हुसैन, डॉ. एस.पी. सिंह, डॉ. एच.के. दीक्षित, डॉ. ए.के. सिंह (आनुवंशिकी संभाग), डॉ. आर.एस. राजे, डॉ. नीलम पटेल, डॉ. श्रीधर, डॉ. पी. कृष्णन, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. रश्मि अग्रवाल, डॉ. एम.के. वर्मा, डॉ. वी.के. सहगल, डॉ. एच. चौधरी, डॉ. जे.पी.एस. डबास, डॉ. महेन्द्र सिंह, डॉ. अनंता वशिष्ठ, डॉ. दिनेश कुमार एवं गिरिजेश मेहरा

खरीफ मौसम में कम वर्षा की स्थिति से निपटने के लिए कृषि परामर्श (जून-जुलाई, 2015)

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार इस साल मानसून की वर्षा सामान्य से लगभग 12 प्रतिशत कम होने की संभावना है। इसको ध्यान में रखते हुए किसान भाइयों को निम्न सलाह दी जाती है, जिससे फसलों के नुकसान को रोका जा सके या कम किया जा सके :

- जहां पर्याप्त मात्रा में सिंचाई की व्यवस्था है उन क्षेत्रों में धान, मक्का, सब्जियां, इत्यादि की फसल समय से ली जा सकती हैं।
- जहां सिंचाई सीमित मात्रा में उपलब्ध है वहां धान के स्थान पर मक्का, बाजरा, दलहनी, तिलहनी व बेलवाली सब्जियां जैसे लौकी, तोरई, टिण्डा, ग्वार, लोबिया इत्यादि फसलें ली जा सकती हैं।
- वर्षा आधारित क्षेत्रों में बाजरा, ज्वार, ग्वार, तिल, मूंग, मोठ, उड़द, मूंगफली, अरहर, सूरजमुखी और सब्जियों में टिण्डा, कचरी, फूट इत्यादि ले सकते हैं।

धान्य फसलें

धान

- वर्षा देर से होने की स्थिति में धान की कम अवधि की किस्में जैसे पूसा बासमती-1509 एवं पूसा सुगंध 5 की पौध की बिजाई 25 से 30 जून तक कर सकते हैं और इनकी रोपाई 25 जुलाई तक कर सकते हैं।
- फफूंद एवं जीवाणुजनित बीमारियों से धान की फसल को बचाने के लिए बीज का उपचार जरूरी है। इसके लिए 1 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन एवं 10-12 ग्रा. बाविस्टिन 10 ली. पानी में घोलकर इसमें 5 कि.ग्रा. बीज को 24 घंटे डुबोकर रखें। बकानी बीमारी से बचाव के लिए उगाई गई पौध की जड़ों को 1 ग्रा./ली. बाविस्टिन घोल में 6 घंटे तक डुबोकर रखें।
- धान की पौध खराब होने की स्थिति में जल्दी पौध तैयार करने वाली निम्न विधि अपनाएं। इस विधि से पौध 12 से 15 दिन में तैयार की जा सकती है:

धान की जल्दी पौध तैयार करने की विधि : एक मीटर उथली क्यारियों में लगभग 2 इंच मोटी सड़ी-गली कम्पोस्ट खाद की तह लगा दें। इसके ऊपर पुरानी जूट की बोरी से ढक दें। बोरी के ऊपर उपचारित अंकुरित बीज को फैला या छिड़क दें और बीजों को महीन खाद से ढक दें। रोजाना सुबह या शाम क्यारियों के चारों तरफ की नालियों में पानी छोड़ें जिससे कि बोरियों में उचित नमी बनी रहे। 12 से 15 दिन में यह पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाएगी।

- धान की बुवाई के लिए रोपाई विधि के अतिरिक्त धान की सीधी बुवाई विधि को अपनाएं। सीधी बिजाई द्वारा बोए गए धान में किसी भी फसल अवशेष की पलवार (मल्लिचंग) करना लाभप्रद रहेगा। धान की सीधी बुवाई संरक्षण खेती (Conservation Agriculture) के परिप्रेक्ष्य (Background) में करना लाभकारी रहेगा। इसके लिए मशीन द्वारा संकरी क्यारी-कूंड बनाए जाते

हैं और धान की 2-3 पंक्तियों में बुवाई की जाती है। उसके बाद फसल अवशेषों का मृदा की सतह पर प्रयोग करें। खरपतवार नियंत्रण हेतु बुवाई के 2-3 दिन के अंदर 1 कि.ग्रा. पैडिमिथालिन अथवा 0.75 कि.ग्रा. प्रैटिलाक्लोर (सक्रिय तत्व) 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर छिड़काव करें।

- धान की सभी विधियों से बोई गई अथवा रोपित फसलों में खरपतवार प्रबंधन अवश्य करें।
- धान के खेत में सिंचाई करते समय खेत में अधिक पानी खड़ा न करें। इसके लिए सिंचाई करने के बाद खड़े हुए पानी को खेत से विलुप्त होने के पश्चात्, 1-2 दिन बाद ही सिंचाई करें।

बाजरा

- मानसून में देरी की अवस्था में किसान भाई सूखा अवरोधी एवं जल्दी पकने वाली संकर किस्में जैसे एचएचबी 67 (उन्नत), एचएचबी 197, एचएचबी 216, एचएचबी 223, एचएचबी 226 एवं एचएचबी 234 का प्रयोग करें। पूसा कम्पोजिट-612 और पूसा कम्पोजिट-383 चारे और दाने दोनों के लिए उपयुक्त है।
- वर्षा के 3-5 सप्ताह देरी होने पर, 3-4 सप्ताह की पहले से तैयार बाजरे की पौध वर्षा होने पर रोपित की जा सकती है।

दलहन

वर्षा 3-सप्ताह देरी से होने की स्थिति में मूंग, अरहर, लोबिया इत्यादि की बुआई 20 जुलाई से 10 अगस्त तक की जा सकती है। ऐसी स्थिति में बुआई के लिए बीज दर लगभग 20 प्रतिशत बढ़ा दें।

मूंग

- मूंग का बाजार भाव बढ़ने के कारण यह फसल अत्यंत लाभकारी हो गई है। मूंग की प्रजातियां पूसा विशाल, पूसा 0672, आईपीएम 02-3 व एसएमएल 668 की बुआई 10 अगस्त तक की जा सकती है तथा इन प्रजातियों की उत्पादन क्षमता 12-14 क्विं./है. है। ये प्रजातियां 60-65 दिन में पककर तैयार हो जाती हैं।

अरहर

- कम समय में पकने वाली किस्मों (पूसा 991, पूसा 992, पूसा 2001, पूसा 2002) की बुआई 10 जुलाई तक की जा सकती है।

शाकीय फसलें

अधिक आमदनी के कारण शाकीय फसलें इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। कम वर्षा की स्थिति में निम्नलिखित सुझाव लाभदायक सिद्ध होते हैं :

- अगेती फूलगोभी तथा खरीफ प्याज की नर्सरी ऊंची क्यारियों में तैयार करें। यह पौध 4-6 सप्ताह के बाद रोपाई के लिए तैयार हो जाती है व इनकी रोपाई अगस्त माह में की जा सकती है।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों की नर्सरी प्रो-ट्रे अथवा पॉली बैग में तैयार कर लें, जो 4 सप्ताह बाद लगाने के लिए तैयार होती है एवं इसकी रोपाई 15 अगस्त तक की जा सकती है।

- टमाटर की नर्सरी प्रो-ट्रे नेट हाउस में तैयार करें।
- हरी व लाल चौलाई, फूट, ग्वार, कचरी, टिण्डा आदि भी कम पानी में अच्छी उपज दे सकते हैं।
- सभी सब्जियों की बुआई/रोपाई मेड़ों पर करें।
- सिंचाई के लिए स्प्रिंकलर का प्रयोग करना लाभप्रद होगा।

चारा फसलें

चारे के लिए बहु उपयोगी बाजरा, लोबिया (सीएस-88 चारे के लिए व एचसी 46, दाने के लिए), ग्वार (एचजी-363, एचजी-365, एचजी-563, एचजी:2-20, एचजी-870), ज्वार आदि फसलों की बुआई जुलाई के प्रथम सप्ताह तक कर सकते हैं।

फल वृक्ष

- फल वृक्षों में बूंद-बूंद (टपक) सिंचाई के साथ थालों में मल्टिचिंग करना आवश्यक है।
- किन्नो तथा मौसमी में पानी का उचित प्रबंध करना आवश्यक है अन्यथा फल गिरने की समस्या अधिक हो सकती है।

संसाधनों का उचित संरक्षण

- खेत की मेड़ें ऊंची व चौड़ी रखें ताकि खेत का पानी खेत में रहे।
- जैव उर्वरक व कम्पोस्ट का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।
- खाली पड़े खेतों को गहरी जुताई करके छोड़ दें ताकि वर्षा का पानी मृदा में ही बना रहे।
- पोषक तत्वों के संतुलित प्रयोग से फसलों की बढ़वार अच्छी होती है तथा प्रतिकूल परिस्थितियों को सहने की क्षमता में वृद्धि होती है। अतः मानसून में देरी अथवा सूखे की स्थिति में मिट्टी परीक्षण आधारित पोषक तत्व प्रबंधन की उपयोगिता और भी बढ़ जाती है।
- हल्के गठन की मिट्टियों में प्रायः गंधक व जस्ते की कमी होती है। यदि जैविक खाद का इस्तेमाल लगातार न किया गया हो तो इन तत्वों की कमी की संभावना बढ़ जाती है। ऐसी मिट्टी में इन तत्वों की अनदेखी न करें।
- फसलों की सूखे के प्रति सहनशीलता बढ़ाने में पोटाश की उपयोगिता सर्वविदित है। सिंचाई की कमी अथवा सूखे की स्थिति में पोटाश की अनदेखी कदापि न करें। हल्के गठन वाली (दोमट अथवा बलुई दोमट) मिट्टियों में पोटाश की आधी मात्रा रोपाई/बुआई के समय तथा शेष आधी मात्रा वैजीटेटिव स्टेज (अधिकतम वानस्पतिक वृद्धि) पर देने से सूखे से बचाव होता है।
- पानी की कमी की स्थिति में धान में रोपाई के 3-4 सप्ताह बाद प्रायः लोहे (आयरन) की कमी के लक्षण प्रकट होते हैं, जिनका निराकरण आवश्यक हो जाता है। ऐसी स्थिति में फेरस सल्फेट के 1-3 प्रतिशत सांद्रता के जलीय घोल का पर्णाय छिड़काव लाभकारी साबित होता है। लक्षणों की गंभीरता के अनुसार एक सप्ताह के अंतराल पर तीन से चार छिड़काव करने से लोहे की कमी पूरी की जा सकती है। छिड़काव के घोल में 0.25 प्रतिशत की दर से बुझा चूना मिला लेना चाहिए।

- अगस्त के अंत तक वर्षा न होने की स्थिति में खाली खेतों में मेड़ बनाकर छोड़ दें ताकि वर्षा का पानी खेत में ही रहे और आने वाली रबी फसलों की बुआई के लिए तैयार रहें।

अन्य ध्यान देने योग्य बातें

- देशी खाद का अधिक से अधिक प्रयोग करें ताकि भूमि की जल धारण क्षमता और पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ सके।
- खाद का संतुलित मात्रा में उपयोग करें, खासतौर पर पोटाश की मात्रा बढ़ाएं ताकि फसल की सूखे से लड़ने की क्षमता बढ़ सके।
- प्रायः खरपतवार लगभग 20-30 प्रतिशत भूमि से पानी खींच लेते हैं। इसके लिए निराई-गुड़ाई द्वारा खरपतवार प्रबंधन करें।
- फसल का चुनाव पानी की उपलब्धता के आधार पर करें, खासतौर पर वर्षा आधारित क्षेत्रों में मूंग, मोठ, तिल, ग्वार, बाजरा, अरहर, मूंगफली को वरीयता दें।
- मक्का, बाजरा, दलहन, तिलहन एवं शाकीय फसलों की खेती मेड़ों पर करें।
- जीवाणु खाद का उपयोग करें तथा धान की पौध जल्दी पौध तैयार करने वाली विधि से तैयार करें।
- यथासंभव टपक तथा फव्वारा सिंचाई का उपयोग करें।

दक्षिण-पश्चिम मानसून वर्षा 2015 का दीर्घावधि पूर्वानुमान

मुख्य सारांश

- समूचे देश के लिए वर्ष-2015 की दक्षिण-पश्चिमी मॉनसून ऋतु (जून-सितम्बर) की वर्षा सामान्य से कम (दीर्घावधि औसत के <90 प्रतिशत) होने की संभावना है ।
- मात्रात्मक रूप से, समूचे देश के लिए मॉनसून ऋतु की वर्षा दीर्घावधि औसत (LPA) के 88 प्रतिशत होने की संभावना है। इसमें ± 4 प्रतिशत की मॉडल त्रुटि हो सकती है ।
- क्षेत्रवार, मॉनसून ऋतु की वर्षा उत्तर पश्चिम भारत में दीर्घावधि औसत के 85 प्रतिशत, मध्य भारत में 90 प्रतिशत, दक्षिणी प्रायद्वीप में 92 प्रतिशत तथा पूर्वोत्तर भारत में 90 प्रतिशत होने की संभावना है । इसमें ± 8 प्रतिशत की मॉडल त्रुटि हो सकती है ।
- समूचे देश के लिए जुलाई माह में दीर्घावधि औसत (LPA) के 92 प्रतिशत तथा अगस्त माह में 90 प्रतिशत वर्षा होने की संभावना है । इसमें ± 9 प्रतिशत की मॉडल त्रुटि हो सकती है।

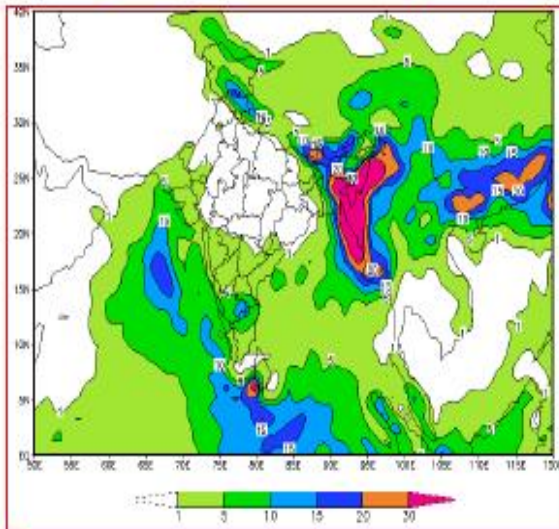
स्रोत : प्रेस विज्ञप्ति, नई दिल्ली, 02 जून 2015

(पृथ्वी प्रणाली विज्ञान संगठन, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग)

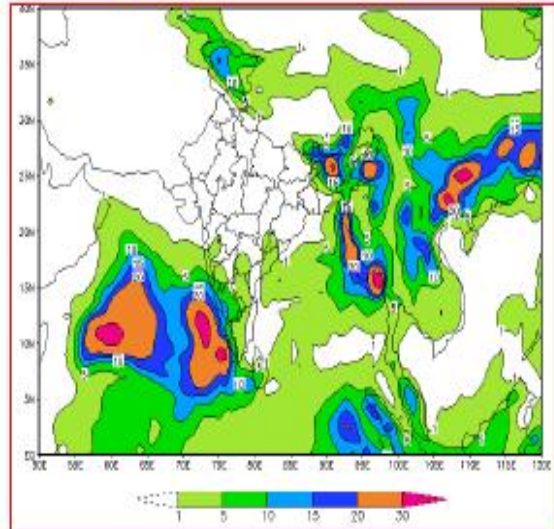
Extended Range Forecast System

Subdivisionwiseraifall forecast map for the next 2 weeks (IC =03June)

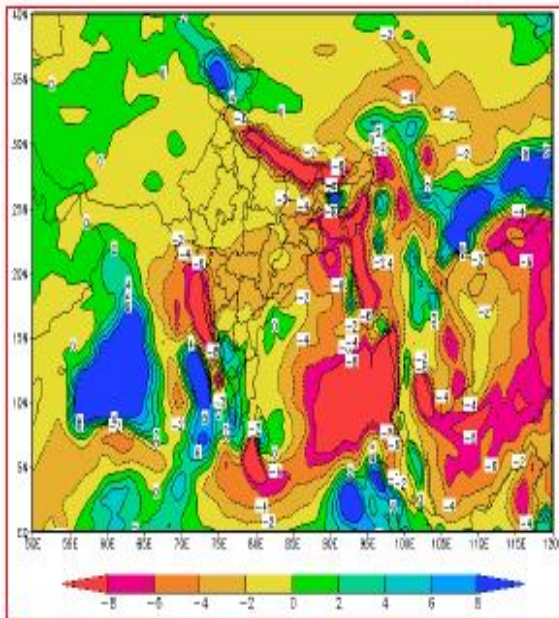
Week 1 (05-11Jun)



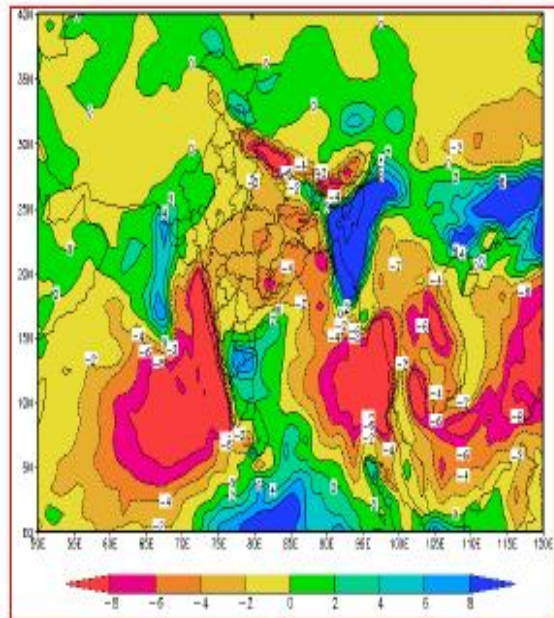
Week 2 (12-18 Jun)



Anomaly - Week 1



Anomaly - Week 2



Source: National Agromet Advisory Service Bulletin, Extended Range Weather Forecast, 5th June, 2015: Earth System Science Organization, India Meteorological Department, Indian Institute of Tropical Meteorology, Pune and Indian Council of Agricultural Research